

मजबूत नीतिगत अवलंब से महामारी के दौरान वित्तीय क्षेत्र काफी हद तक प्रत्यास्थी और सुदृढ़ बना रहा। उच्च पूँजी बफर और कम लीवरेज ने वैश्विक बैंकों को वास्तविक क्षेत्र को ऋण और अन्य महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान करने में सक्षम बनाया। शीर्ष 100 बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में मामूली गिरावट दर्ज की गई। हालांकि, आगे चलकर, नीतिगत अवलंब चरणबद्ध तरीके से जैसे-जैसे हटता जाएगा, बैंकों को दबाव कम करने और दृढ़तर होकर उभरने के लिए सतर्क रहने की आवश्यकता है।

1. भूमिका

II.1 महामारी की नई लहरों के बीच वैश्विक अर्थव्यवस्था के कुछ अधिकार-क्षेत्रों में रुक-रुक कर सुधार हो रहा है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने 2021 की दूसरी छमाही में, गति में आई कुछ कमी को देखकर, वर्ष के लिए अपने वैश्विक विकास पूर्वानुमान को कम करते हुए इसे संशोधित कर 5.9 प्रतिशत¹ कर दिया है तथा इसके लिए ऊर्जा की बढ़ती हुई कीमतों और आपूर्ति श्रृंखला बाधाओं को अधोमुखी जोखिम बताया है। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (ईई) और उदीयमान बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) के लिए समष्टि आर्थिक परिदृश्य भिन्न दिशाओं में जा रहा है, जो संक्रमण और टीकाकरण में अंतर को दर्शाता है (चार्ट II.1ए)। आगे चलकर उच्च टीकाकरण दरों के साथ यह अंतर कम हो सकता है। 25 दिसंबर 2021 की स्थिति के अनुसार विश्व जनसंख्या के अनुमानतः 57.4 प्रतिशत को टीके की कम से कम एक खुराक मिल चुकी है, जिसमें से 48.3 प्रतिशत पूरी तरह से टीकाकृत थे।² वैश्विक सुधार की गति नीतिगत समर्थन पर भी निर्भर है। ईई ने जहाँ 2020 में पर्याप्त वित्तीय सहायता प्रदान की है और वे इसे 2021 से भी आगे बढ़ाना चाहते हैं, वहीं ईएमडीई में राजकोषीय प्रोत्साहन या तो समाप्त हो गए हैं या शीघ्र ही समाप्त होने वाले हैं। कुछ ईई ने किसी न किसी रूप में मौद्रिक

नीति टेपर³ प्रारम्भ कर दिए हैं, जबकि बढ़े हुए मुद्रास्फीति जोखिमों (चार्ट II.1बी) ने ईएमडीई को मौद्रिक नीति को आक्रामकता से सख्त करने को मजबूर किया है।

II.2 उत्पादक कीमत मुद्रास्फीति (पीपीआई) यूरो क्षेत्र में द्विअंकी है तथा जापान और यूएस में 8.0 प्रतिशत या इससे अधिक है। उत्पादकों ने कीमत में वृद्धि को खुदरा स्तर पर अंतरित करना प्रारम्भ कर दिया है, और इसके परिणामस्वरूप, विभिन्न अधिकार-क्षेत्रों में सीपीआई मुद्रास्फीति में बहुत तेजी से वृद्धि हो रही है तथा यह यूएस में नवम्बर 2021 में 6.8 प्रतिशत पहुँच गई, जो 40 वर्षों में सर्वाधिक थी। अन्य ईई एवं ईएमडीई में भी मुद्रास्फीति या तो अधिक है या सख्त सीमा के कगार पर है। अभी यह नहीं कहा जा सकता कि ये मुद्रास्फीतीय दबाव 'अस्थायी' होंगे या 'सतत' बने रहेंगे।

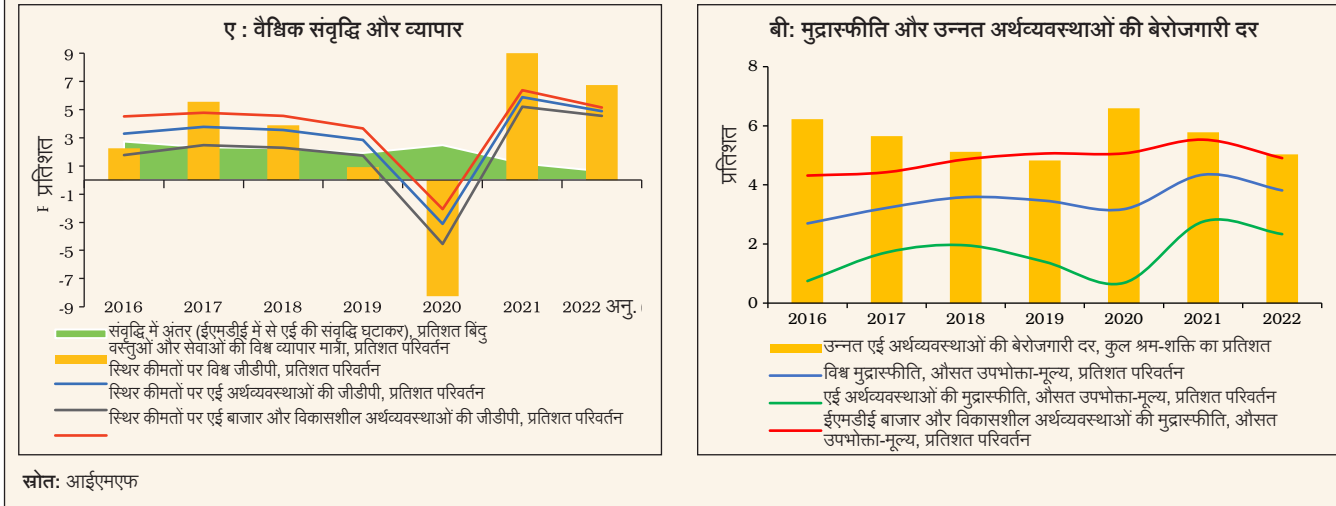
II.3 न्यूजीलैंड, दक्षिण कोरिया और यूके सहित कुछ ईई और कुछ ईएमडीई जैसे ब्राज़ील, चिली, हंगरी, मैक्सिको, रूस, श्रीलंका और उरुग्वे ने अवरुद्ध मांग और आपूर्ति श्रृंखला अवरोधों के टकराव से उत्पन्न मूल्य दबावों को नियंत्रित करने के लिए मौद्रिक नीति दरों को बढ़ाना शुरू कर दिया है (चार्ट II.2ए और बी)। कनाडा ने अपने मात्रात्मक सुलभता कार्यक्रम (क्यूई) पर विराम लगा दिया है।

¹ अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (2021)। 'वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक : रिकवरी ड्रूयिंग ए पेन्डेमिक - हेल्थ कन्सर्न्स, सप्लाई डिस्लैन्स, एंड प्राइस प्रेशर्स', अक्टूबर <https://www.imf.org/en/Publications/WEO>, पर उपलब्ध।

² स्रोत : <https://ourworldindata.org/covid-vaccinations#>

³ 15 दिसंबर 2021 को यूएस फेड रिजर्व ने ट्रेजरी प्रतिभूतियों के लिए अपनी शुद्ध आस्ति खरीद की मासिक गति को 20\$ बिलियन डॉलर और एजेंसी बंधक-समर्थित प्रतिभूतियों के लिए 10\$ बिलियन डॉलर कम करने का फैसला किया है।

चार्ट II.1 समष्टि आर्थिक पृष्ठभूमि

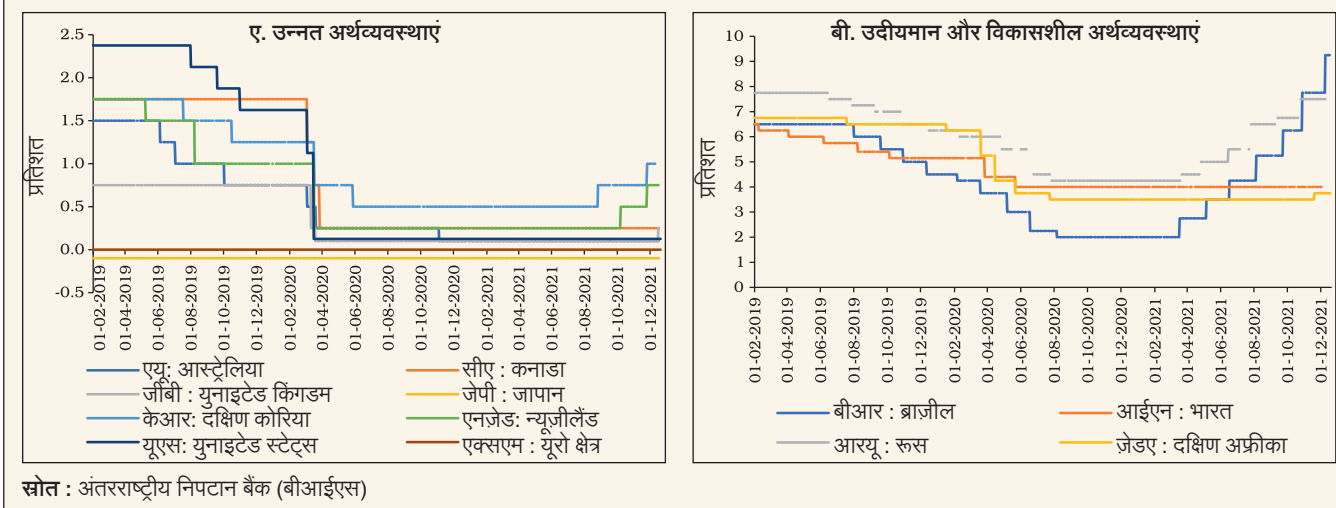


II.4 नए प्रकार के कोरोना वायरस संक्रमण के यत्र-तत्र फिर से बढ़ने की संभावना से 2022 के लिए परिदृश्य अनिश्चित व अधोमुखी बना हुआ है जो सकारात्मक पक्षों पर भारी है। आईएमएफ का वैश्विक संवृद्धि के धीमा होकर 4.9 प्रतिशत होने और वैश्विक व्यापार मात्रा के 2021 के 9.7 प्रतिशत से घटकर 2022 में 6.7 प्रतिशत होने का अनुमान है।

II.5 इस अध्याय का शेष भाग भाग 2 में समीक्षाधीन अवधि में वैश्विक बैंकिंग घटनाक्रमों को प्रस्तुत करता है, जिसमें आईएमएफ,

अंतर्राष्ट्रीय निपटान बैंक (बीआईएस) और वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) सहित विभिन्न स्रोतों से जानकारी प्राप्त की गई है। भाग 3 ऋण संवृद्धि, आस्ति गुणवत्ता, पूँजीगत बफर और लीवरेज के आधार पर वैश्विक बैंकों के कार्यनिष्पादन का मूल्यांकन करता है। टीयर -1 पूँजी के आधार पर वर्गीकृत विश्व के 100 सबसे बड़े बैंकों का कार्यनिष्पादन भाग-4 में प्रस्तुत किया गया है। वैश्विक बैंकिंग क्षेत्र की भावी संभावनाओं के साथ भाग-5 में इस अध्याय के निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

चार्ट II.2 मौद्रिक नीति दरें



2. वैश्विक बैंकिंग नीतिगत घटनाक्रम

11.6 वैश्विक महामारी के चलते सामने आई असाधारण परिस्थितियों को देखते हुए, जिसने कई विनियामकों और पर्यवेक्षकों को विनियामकीय राहत प्रदान करने के लिए ढांचे में मौजूदा लचीलेपन का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया, बेसल III मानकों को लागू करने के दिनांकों (दिसंबर 2017 में अंतिम रूप दिया गया था), संशोधित स्तंभ 3 प्रकटीकरण आवश्यकताओं (दिसंबर 2018 में अंतिम रूप दिया गया था) और संशोधित बाजार जोखिम ढांचे (जनवरी 2019 में अंतिम रूप दिया गया) को एक वर्ष के लिए के लिए, 1 जनवरी 2023⁴ तक, स्थगित कर दिया गया है। अब ये पाँच वर्ष की अवधि में चरणबद्ध रूप से लागू होंगे। इस बीच में, बासल III के उन मानकों के कार्यान्वयन में प्रगति हुई है जिनके लिए स्वीकृत समयसीमा लागू है।

11.7 वित्तीय सुधार के अन्य पक्षों जैसे 'इतने-बड़े-कि-न-डूबे' / 'टू-बिग-टू-फेल' (टीबीटीएफ), डेरिवेटिव बाजारों को सुरक्षित बनाने, और सुदृढ़ गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाओं (एनबीएफआई) को बढ़ावा देने से संबंधित संरचना तैयार है और उनका कार्यान्वयन हो रहा है। वैश्विक महामारी के दौरान, ध्यान कमजोरियों के नए स्रोतों को समझने की ओर गया है⁵

सुदृढ़ वित्तीय संस्थाओं का निर्माण

11.8 मई 2020 के अंत की स्थिति के अनुसार सभी 27 सदस्य अधिकार क्षेत्रों ने पहले ही बासल मानकों यथा, जोखिम आधारित पूँजी नियम, चलनिधि व्याप्ति अनुपात (एलसीआर) और पूँजी संरक्षण बफर (सीसीओबी) को कार्यान्वित किया है। सभी अधिकार क्षेत्रों में प्रतिचक्रीय पूँजी बफर (सीसीवाईबी) के

कार्यान्वयन के अंतिम नियम तैयार हैं⁶ पूँजी मानकों के मामले में ग्यारह, निवल स्थिर निधीयन अनुपात (एनएसएफआर)⁷ के मामले में चार, और प्रकटीकरण मानकों से संबंधित सात नए अभिग्रहण (एडॉप्शन) हुए हैं। बासेल III मानकों के संबंध में, जिनका अंतिम दिनांक भविष्य में है, 'संशोधित परिचालन जोखिम ढांचे'⁸ के नए अनुकूलक (एडॉप्टर्स) और ऋण जोखिम के लिए संशोधित मानकीकृत दृष्टिकोण⁹ थे।

11.9 सितंबर 2021 के अंत तक, छब्बीस अधिकार क्षेत्रों (ऑस्ट्रेलिया को छोड़कर) ने लीवरेज अनुपात को लागू किया है। जहां तक प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बैंकों का संबंध है, प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बैंकों (जी-एसआईबी) के गृह अधिकार क्षेत्रों वाले सभी सदस्यों ने जहाँ अंतिम नियम लागू कर दिए हैं, वहीं छब्बीस सदस्यों ने घरेलू प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बैंकों (डी-एसआईबी) के लिए अंतिम नियम लागू किए हैं।

11.10 जैसा कि पहले सूचित किया गया है पिछले वर्ष के दौरान चार नए अधिकार-क्षेत्रों ने चलनिधि मानकों के अंतर्गत एनएसएफआर को अपना लिया है। इसके अतिरिक्त, बाईस अधिकार-क्षेत्रों ने 'अंतर्दिवसीय चलनिधि प्रबंधन के लिए निगरानी के साधनों' से संबंधित अंतिम नियमों को लागू कर दिया है¹⁰। अधिकतर सदस्यों ने (22 से 26 के बीच) लीवरेज अनुपात, प्रतिपक्षी ऋण जोखिम को मापने के लिए मानकीकृत दृष्टिकोण (एसएसीसीआर), बड़े एक्सपोजर (एलईएक्स) के माप और नियंत्रण के लिए पर्यवेक्षी ढांचा, अंतर्दिवसीय चलनिधि प्रबंधन के लिए निगरानी साधनों, गैर-केंद्रीय समाशोधित व्युत्पन्नी के लिए मार्जिन अपेक्षाओं (एनसीसीडी), संशोधित

⁴ मार्च 2020 में, केंद्रीय बैंकों के गवर्नरों और पर्यवेक्षण प्रमुखों के समूह ने वैश्विक बैंकिंग प्रणाली पर कोविड-19 के प्रभाव के परिणामस्वरूप वित्तीय स्थिरता प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए बैंकों और पर्यवेक्षकों के लिए अतिरिक्त परिचालन क्षमता प्रदान करने के उपायों का समर्थन किया।

⁵ एफएसबी(2021) इम्प्लिमेंटेशन एंड इफेक्ट्स ऑफ द जी20- फाइनेंशियल रेग्युलेटरी रिफॉर्म्स <https://www.fsb.org/wp-content/uploads/P1-131120.pdf> पर उपलब्ध

⁶ स्रोत: बीआईएस (2021), प्रोग्रेस रिपोर्ट ऑन अडॉप्शन ऑफ द बासल रेग्युलेटरी फ्रेमवर्क, <https://www.bis.org/bcbs/publ/d525.htm> पर उपलब्ध है।

⁷ जापान, मेक्सिको, स्विट्जरलैंड और यूके

⁸ इंडोनेशिया, मेक्सिको और रूस

⁹ मेक्सिको

¹⁰ चीन, जापान और कोरिया ने नियमों को नहीं अपनाया है जबकि कनाडा अंतिम नियमों को प्रकाशित किया है लेकिन अभी तक नियमों को लागू नहीं किया है।

प्रतिभूतिकरण ढांचा, फंड में निवेश के लिए इक्विटी हेतु पूँजी अपेक्षाओं और संशोधित पिलर 3 की प्रकटीकरण अपेक्षाओं के लिए अंतिम नियमों को या तो लागू कर दिया है या इनके मसौदा नियम (ड्राफ्ट रूल्स) प्रकाशित किए हैं¹¹

II.11 हालांकि, अन्य बासल III मानकों के कार्यान्वयन में, जिसके लिए समय सीमा निकल चुकी है, सीमित प्रगति हुई है। इनमें बैंकिंग बही खाता में ब्याज दर जोखिम (आईआरआरबीबी)¹²; केंद्रीय प्रतिपक्षकारों को बैंक एक्सपोजर के लिए पूँजी अपेक्षाएं¹³; टीएलएसी धारिताएँ (होल्डिंग्स)¹⁴; केंद्रीय रूप से समाशोधित न होने वाले डेरिवेटिव के लिए मार्जिन अपेक्षाएं¹⁵ और संशोधित पिलर 3 ढांचा¹⁶ शामिल हैं।

II.12 लगभग सभी वैश्विक - प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बैंकों के गृह (होम) और प्रमुख मेजबान (होस्ट) अधिकार क्षेत्रों में व्यापक बैंक समाधान व्यवस्थाएं हैं जो एफएसबी प्रमुख विशेषताओं (की एट्रीब्यूट्स) के अनुरूप हैं¹⁷। कुछ अन्य एफएसबी अधिकार क्षेत्रों में प्रमुख विशेषताओं (की एट्रीब्यूट्स) का कार्यान्वयन अभी भी अधूरा है। डूबने वाले बैंकों के लिए सरकारी समर्थन जारी है। प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बैंकों¹⁸ के लिए समाधान योजनाओं के परिचालन और बीमाकर्ताओं और केंद्रीय प्रतिपक्षकारों (सीसीपी)¹⁹ के लिए प्रभावी समाधान व्यवस्था

लागू करने की दिशा में अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। सीसीपी की प्रत्यास्थता, सुधार और समाधान को बेहतर करने और ट्रेड रिपोर्टिंग को वास्तव में प्रभावी बनाने; कदाचार जोखिमों को कम करने के लिए अभिशासन मानकों को मजबूत करने; प्रतिनिधि बैंकिंग में गिरावट को दूर करने; वित्तीय स्थिरता के लिए फिनटेक के निहितार्थों का विश्लेषण, वित्तीय नवोन्मेष, भुगतान प्रणाली, साइबर प्रत्यास्थता और बाजार वर्गीकरण के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी कार्य किया जा रहा है। वित्तीय प्रणाली में उनकी प्रणालीगत भूमिका को देखते हुए सीसीपी की समाधेयता को लेकर अनिश्चितता बनी हुई है। वसूली और समाधान में सीसीपी वित्तीय संसाधनों के उपयोग, संरचना और राशि पर अंतर्राष्ट्रीय नीति की आवश्यकता के आकलनको लेकर चल रहे चुनौतीपूर्ण और महत्वपूर्ण कार्य को तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है²⁰

इतने-बड़े-कि-न-डूबे (टू-बिग-टू-फेल/ टीबीटीएफ) सुधार

II.13 मार्च 2021 में, एफएसबी ने यह जांच की कि टीबीटीएफ सुधार कहाँ तक मूल उद्देश्य के अनुरूप कार्य कर रहे हैं²¹। मूल्यांकन में विशेषतः इस पर ध्यान दिया गया (i) कि सुधार एसआईबी से जुड़े प्रणालीगत और नैतिक संकट वाले जोखिमों को कम कर रहे हैं या नहीं; और (ii) वित्तीय प्रणाली पर सुधारों के व्यापक प्रभाव (सकारात्मक या नकारात्मक) क्या हैं। इतने-

¹¹ भारत में प्रतिभूतिकरण ढांचे को अपनाया जाना अभी प्रारम्भ नहीं हुआ है, जबकि केंद्रीय रूप से समाशोधित न होने वाले डेरिवेटिव्स (एनसीसीडी) के लिए मार्जिन आवश्यकता का कार्यान्वयन प्रगति पर है।

¹² ऑस्ट्रेलिया, भारत, मैक्सिको, रूस, दक्षिण अफ्रीका और तुर्की ने अभी तक नियम जारी नहीं किए हैं और यूके ने अभी तक नियमों को लागू नहीं किया है।

¹³ भारत ने अंतिम नियम 2016 में लागू किए। जिन अधिकार क्षेत्रों में ऐसा किया जाना शेष है उनमें चीन, इंडोनेशिया, मैक्सिको, रूस और तुर्की शामिल हैं।

¹⁴ चीन, भारत, कोरिया, दक्षिण अफ्रीका और तुर्की द्वारा अभी अंतिम दिशानिर्देश जारी किए जाने हैं।

¹⁵ अर्जेंटीना, चीन, इंडोनेशिया, भारत, मैक्सिको, तुर्की और रूस द्वारा अभी अंतिम नियम जारी किए जाने हैं।

¹⁶ ऑस्ट्रेलिया, चीन, भारत और यू.एस. द्वारा अभी तक मसौदा नियम जारी किए जाने हैं, जबकि इंडोनेशिया, मैक्सिको, यू.के. में केवल आंशिक कार्यान्वयन हुआ है।

¹⁷ एफएसबी (2011), *की एट्रीब्यूट्स ऑफ इफेक्टिव रिजोल्यूशन रैजिम्स फॉर फिनैन्शल इन्स्टीट्यूशन* https://www.fsb.org/wp-content/uploads/r_111104cc.pdf पर उपलब्ध।

¹⁸ जोखिम डेटा एकत्रीकरण और जोखिम रिपोर्टिंग पर बीसीबीएस सिद्धांतों के अनुपालन के स्तर में अभी भी सुधार किया जाना है।

¹⁹ बेल-इन और शीघ्र समापन अधिकारों के प्रयोग पर अस्थायी रोक लगाने की शक्तियों की सबसे अधिक कमी है

²⁰ एफएसबी (2021), *"ग्लास हाफ-फुल ऑर स्टिल हाफ-एंप्टी?"* <https://www.fsb.org/wp-content/uploads/P071221.pdf> पर उपलब्ध।

²¹ एफएसबी(2021)। *इवेल्यूएशन ऑफ द इफेक्ट्स ऑफ टू-बिग-टू-फेल रिफॉर्म्स*, <https://www.fsb.org/2021/03/evaluation-of-the-effects-of-too-big-to-fail-reforms-final-report/> पर उपलब्ध।

बड़े-कि-न-डूबे (टीबीटीएफ) सुधारों के सामाजिक लाभों को वित्तीय संकट की कम संभावना और गंभीरता के संदर्भ में मापा जाता है, जबकि सुधारों की सामाजिक लागतों को बैंक ऋण की लागत में वृद्धि के माध्यम से मापा जाता है। मूल्यांकन में पाया गया कि टू-बिग-टू-फेल (टीबीटीएफ) सुधारों ने बैंकों को आघात सहने में अधिक सक्षम और समाधेय बना दिया है और समाज को इनसे निवृत्त लाभ मिला है। इसने उन कमियों की भी पहचान की है जिन्हें दूर किया जाना है। चूंकि गैर-बैंक वित्तीय संस्थानों ने बाजार अंश प्राप्त किया है, अतः कुछ जोखिम बैंकिंग प्रणाली से बाहर चले गए हैं। समाधान संरचना और निधीयन तंत्र से संबंधित सूचनाओं के सार्वजनिक प्रकटीकरण में सुधार की भी गुंजाइश है।

II.14 सीमापार भुगतान (क्रॉस बॉर्डर पेमेंट्स) भी ध्यान दिए जाने वाले क्षेत्रों में एक है जिसमें गति, लागत, पहुँच और पारदर्शिता संबंधी चुनौतियाँ हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए एफएसबी द्वारा भुगतान और एवं बाजार इंफ्रास्ट्रक्चर संबंधी समिति (सीपीएमआई) तथा अन्य प्रासंगिक अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और मानक-निर्धारण निकायों के साथ समन्वय में एक रोडमैप तैयार किया है²²। इस रोडमैप के तहत एफएसबी का 19 निर्माण खंडों (बिल्डिंग ब्लॉक्स) के अंतर्गत की गई कार्रवाइयों के माध्यम से 2027 के अंत तक सभी चार क्षेत्रों में सुधार के संदर्भ में विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रस्ताव है²³।

डेरिवेटिव बाजारों को सुरक्षित बनाना ²⁴

II.15 जी-20 के काउंटर पर (ओटीसी) डेरिवेटिव सुधारों का समग्र कार्यान्वयन काफी आगे है परंतु अक्टूबर 2020 से एफएसबी सदस्य अधिकार-क्षेत्रों में वृद्धिशील प्रगति हुई है। प्रगति की निगरानी निम्नलिखित छह संकेतकों से की जाती है : (i)

बाजार रिपोर्टिंग अपेक्षाएं, (ii) केंद्रीय रूप से समाशोधित (क्लियर) न होने वाले डेरिवेटिव (एनसीसीडी) के लिए अंतरिम पूँजी अपेक्षाएं, (iii) प्लेटफार्म ट्रेडिंग, (iv) अधिदेशात्मक केंद्रीय समाशोधन (मेंडेटरी सेंट्रल क्लियरिंग), (v) एनसीसीडी के लिए मार्जिन अपेक्षाएं और (vi) एनसीसीडी के लिए अंतिम पूँजी अपेक्षाएं। 23 एफएसबी अधिकार-क्षेत्रों में ओटीसी डेरिवेटिव लेन-देनों और केंद्रीय रूप से समाशोधित न होने वाले डेरिवेटिव के लिए अंतरिम पूँजी अपेक्षाओं के लिए बाजार रिपोर्टिंग आवश्यकताएं विद्यमान हैं। 13 अधिकार-क्षेत्रों के लिए प्लेटफार्म ट्रेडिंग अपेक्षाएं लागू हैं जबकि 17 अधिकार-क्षेत्रों में अधिदेशात्मक केंद्रीय समाशोधन अपेक्षाओं के लिए पहले से ही व्यापक मानक हैं। एनसीसीडी के लिए अंतिम पूँजी आवश्यकता के लिए पंद्रह अधिकार-क्षेत्रों में नियम लागू हैं। सोलह अधिकार-क्षेत्रों ने एनसीसीडी के लिए मार्जिन अपेक्षा के लिए अंतिम नियम लागू किए हैं।

सुदृढ़ गैर-बैंकिंग वित्तीय मध्यस्थता (एनबीएफआई) को बढ़ावा

II.16 गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता (एनबीएफआई) सुधारों का कार्यान्वयन चल रहा है लेकिन अन्य सुधारों की तुलना में यह आरंभिक चरण में है²⁵ एफएसबी और मानक-निर्धारण निकायों (एसएसबी) ने महामारी के झटके से निपटने के लिए फर्मों और प्राधिकरणों को अतिरिक्त क्षमता प्रदान करने के लिए कुछ सुधारों के लिए कार्यान्वयन की समय सीमा बढ़ा दी है। मार्च 2020 के बाजार में उथल-पुथल से शिक्षा लेकर, एफएसबी अन्य एसएसबी के साथ मिलकर, एनबीएफआई क्षेत्र के लाभों को संरक्षित करते हुए, आघात-सहन-क्षमता को बढ़ाने के लिए काम कर रहा है। इस क्षेत्र में किए गए प्रमुख कार्यों में मुद्रा बाजार निधियों (एमएमएफ)

²² एफएसबी(2020)। एन्हेन्सिंग क्रॉस-बॉर्डर पेमेंट्स : स्टेज 3 रोडमैप। <https://www.fsb.org/10/2020/enhancing-cross-border-payments-stage-3-roadmap/> पर उपलब्ध

²³ एफएसबी(2021)। टार्गेट्स फॉर अड्रेसिंग द फोर चेलन्ज्स ऑफ क्रॉस-बॉर्डर पेमेंट्स <https://www.fsb.org/wp-content/uploads/P310521.pdf> पर उपलब्ध

²⁴ एफएसबी(2021), ओटीएस डेरिवेटिव्स मार्केट रिफॉर्मर्स : इम्प्लेमेंटेशन प्रोग्रेस इन 2021, <https://www.fsb.org/wp-content/uploads/P031221.pdf> . पर उपलब्ध

²⁵ कुछ अधिकार क्षेत्रों में प्रतिभूतियों के वित्तपोषण लेनदेन के लिए एफएसबी नीति की सिफारिशों के कार्यान्वयन में काफी देरी का सामना करना पड़ रहा है। वैश्विक प्रतिभूतियों के वित्तपोषण संबंधी आंकड़े एकत्र और संकलित करने के मानकों और प्रक्रियाओं को अपनाने का कार्य प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त, आस्ति प्रबंधन गतिविधियों में चलनिधि और लिवरेज से संरचनात्मक कमजोरियों को दूर करने के लिए एफएसबी और आईओएससीओ सिफारिशों का कार्यान्वयन जारी है।

की आघात-सहनशीलता को बढ़ाने के लिए नीतिगत प्रस्ताव; निर्बंध निधि (ओईएफ) में चलनिधि असंतुलन को दूर करना; केंद्रीय रूप से समाशोधित (क्लियर्ड) और अकेंद्रीय रूप से समाशोधित डेरिवेटिव में मार्जिन कॉल के ढांचों और गतिशीलता की जाँच करना शामिल हैं।

लंदन अंतर-बैंक प्रस्तावित दर(लाइबोर) की चरणबद्ध समाप्ति

II.17 ब्याज दर बेंचमार्क वैश्विक वित्तीय बाजारों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 2014 में हेरफेर के प्रयास के मामलों और प्रमुख अंतरबैंक असुरक्षित फंडिंग बाजारों में चलनिधि में गिरावट के फलस्वरूप भी, विश्व स्तर पर सुसंगत रोडमैप तैयार करने के लिए, राष्ट्रीय प्राधिकारियों के समन्वय में कार्य करते हुए एफएसबी ने अंतर-बैंक प्रस्तावित दरों(आईबीओआर) में सुधार करने की सिफारिशों की जो फर्मों को लाइबोर के उपयोग को रोकने और वैकल्पिक बेंचमार्क की पहचान करने के लिए प्रोत्साहित करता है। अक्टूबर 2020 में एफएसबी ने ग्लोबल ट्रेनिंग रोडमैप प्रकाशित किया, जो वित्तीय और गैर-वित्तीय क्षेत्र की फर्मों के लिए कार्रवाई की एक समय सारणी निर्धारित करता है ताकि 2021 के अंत तक लाइबोर से एक सुचारु संक्रमण सुनिश्चित किया जा सके। मार्च 2020 में यूके फाइनेंशियल कंडक्ट अथॉरिटी (एफसीए) और इंटरकांटीनेंटल एक्सचेंज (आईसीई) बेंचमार्क प्रशासन (आईबीए) बेंचमार्क एडमिनेस्ट्रेशन (आईबीए) ने यह घोषणा की है कि 31 दिसम्बर 2021 के तुरंत पश्चात एक सप्ताह और दो महीने का यू.एस. डॉलर (यूएसडी) लाइबोर सेटिंग्स प्रकाशित होना बंद हो जाएगा। हालांकि, एक दिवसीय (ओवरनाइट), एक-, तीन-, छह-, और 12 माह यू.एस. डॉलर लाइबोर सेटिंग्स का प्रकाशन 30 जून 2023 तक बढ़ाया जाएगा, ताकि वर्तमान संविदाओं (कॉन्ट्रैक्ट) को समाप्त करने (विंड डाउन) अथवा शर्तों पर पुनः बात-चीत (रिनेगोशिएट) करने के लिए अतिरिक्त समय प्रदान किया जा सके। ऑफिस ऑफ

कम्पट्रोलर ऑफ करेंसी/ मुद्रा नियंत्रक कार्यालय (ओसीसी), यूएस फेडरल रिज़र्व और फेडरल डिपॉज़िट इंश्योरेंस कॉरपोरेशन (एफडीआईसी) ने अपने संयुक्त बयान में पर्यवेक्षित संस्थाओं को जितनी जल्दी व्यवहार्य हो और अधिकतम 31 दिसंबर 2021 तक ऐसी नई संविदाएं (कॉन्ट्रैक्ट), जिनमें यू.एस. डॉलर लाइबोर को संदर्भ दर के रूप में उपयोग हो, न करने को प्रोत्साहित किया है।

जलवायु-संबंधी वित्तीय खुलासा

II.18 प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति और तीव्रता के कारण, विश्व का ध्यान अब जलवायु परिवर्तन संबंधित जोखिमों से वित्तीय स्थिरता के प्रति जोखिमों की ओर हो गया है²⁶ (बॉक्स II.1)। पारंपरिक जोखिम आकलन इन अनिश्चितताओं का पता लगाने के लिए अपर्याप्त हैं। एफएसबी की 2015 की जलवायु संबंधी वित्तीय प्रकटीकरण कार्य बल (टीसीएफडी) ने 2017 में अपनी सिफारिशों को अंतिम रूप दिया²⁷ इन सिफारिशों को स्वेच्छा से लागू किया जा रहा है। टीसीएफडी (14 अक्टूबर, 2021) की सिफारिशों को अपनाए जाने संबंधी चौथी स्थिति रिपोर्ट के अनुसार जलवायु संबंधी वित्तीय जानकारी के खुलासे में लगातार वृद्धि हुई है, तथापि, अभी भी काफी प्रगति की आवश्यकता है क्योंकि समीक्षा की गई तीन कंपनियों में से औसतन केवल एक ने टीसीएफडी सिफारिशों के सामंजस्य में जलवायु संबंधी जानकारी का खुलासा किया है²⁸ अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय रिपोर्टिंग मानक (आईएफआरएस) फाउंडेशन एक अंतरराष्ट्रीय धारणीयता मानक बोर्ड (आईएसएसबी) की स्थापना कर रहा है जो टीसीएफडी ढांचे और निरंतरता मानक निर्धारकों के गठबंधन के कार्य से निर्मित बेसलाइन वैश्विक निरंतरता रिपोर्टिंग मानक विकसित करेगा। इसने अधिक संगति और तुलनीयता के लिए प्रकटीकरण के स्तर में सुधार की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला। हालांकि, जलवायु संबंधी

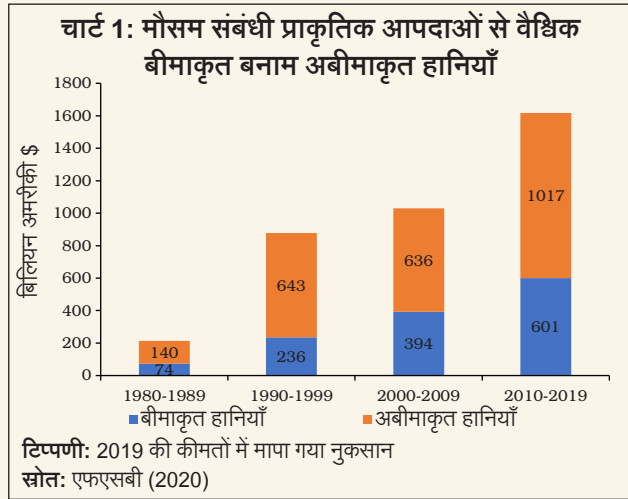
²⁶ बीआईएस(2020)। *द ग्रीन स्वॉन – सेंट्रल बैंकिंग एंड फिनेंशियल स्टैबिलिटी इन द एज ऑफ क्लाइमेट चेंज*, <https://www.bis.org/publ/othp31.pdf> पर उपलब्ध

²⁷ टीसीएफडी का उद्देश्य 'निवेशकों, ऋणदाताओं और बीमा हामीदारों को उनके जलवायु संबंधी वित्तीय जोखिमों के बारे में जानकारी प्रदान करने में कंपनियों द्वारा उपयोग के लिए स्वेच्छिक, सुसंगत प्रकटीकरण सिफारिशों का विकास था।'

²⁸ एफएसबी(2020)। *द इंप्लीकेशंस ऑफ क्लाइमेट चेंज फॉर फिनेंशियल स्टैबिलिटी*, <https://www.fsb.org/wp-content/uploads/P231120.pdf> पर उपलब्ध

बॉक्स II.1: जलवायु परिवर्तन और वित्तीय स्थिरता: आकलन और भावी मार्ग

एफएसबी (2020) का अनुमान है कि 1990 के बाद से विनाशकारी मौसम की घटनाओं से वैश्विक आर्थिक नुकसान दुगुना हो गया है और पिछले दस वर्षों में 1.6 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया है।



जलवायु परिवर्तन और जलवायु नीतियों में केंद्रीय बैंकों के व्यापक अधिदेशों को प्रभावित करने की संभावना है। यद्यपि केंद्रीय बैंकों के पास अपने परिचालन ढांचे में जलवायु संबंधी जोखिमों को शामिल करने के लिए कई नीतिगत विकल्प उपलब्ध हैं, फिर भी इस बात पर कोई सहमति नहीं है कि कौन सा समायोजन इष्टतम होगा। कुछ नीतिगत विकल्प निम्नलिखित हैं :

- (1) ऋण परिचालन: (ए) प्रतिपक्षकारों के जलवायु-संबंधी ऋण देने को प्रतिबिंबित करने के लिए मूल्य निर्धारण का समायोजन; (बी) गिरवी रखी गई संपार्श्विक की संरचना को दर्शाने के लिए मूल्य निर्धारण का समायोजन; (सी) प्रतिपक्षकारों की पात्रता का समायोजन।
- (2) संपार्श्विक: (ए) हेयरकट का समायोजन; (बी) नकारात्मक स्क्रीनिंग; (सी) सकारात्मक स्क्रीनिंग; (डी) संपार्श्विक समूहों (कोलेटरल पूल्स) का जलवायु संबंधी उद्देश्यों के साथ सामंजस्य और
- (3) आस्ति क्रय : (ए) टिल्ट क्रय, (बी) नकारात्मक स्क्रीनिंग (एनजीएफएस, 2021)

जुलाई 2020 में एफएसबी के आकलन के अनुसार, 33 में से 24 अधिकार क्षेत्रों ने यह रिपोर्ट किया है कि वित्तीय स्थिरता निगरानी के अपने समग्र ढांचे में वे जलवायु संबंधी जोखिमों को वर्तमान में मापने का प्रयास कर रहे हैं, या भविष्य में मापने की योजना बना रहे हैं। अधिकारक्षेत्र या तो 'शीर्ष से तल' ('टॉप डाउन') मूल्यांकन का प्रयोग कर रहे हैं, जिसमें स्वयं प्राधिकारियों द्वारा जोखिम के परिमाण का अनुमान समष्टि-स्तर पर लगाया जाता है, या अधिक संबद्ध 'तल से शीर्ष' ('बॉटम अप') अनुमान का, जिसकी गणना प्राधिकारियों द्वारा निर्दिष्ट एक सामान्य परिदृश्य/थो पर आधारित वित्तीय संस्थानों के प्रतिसादों से की जाती है। एफएसबी ने चार स्तंभों पर केन्द्रित एक दिशाचित्र

(रोडमैप) भी प्रकाशित किया है : (i) व्यक्तिगत संस्थाओं और बाजार सहभागियों के स्तर पर जलवायु संबंधी वित्तीय जोखिमों के मूल्य निर्धारण और प्रबंधन के लिए फर्म स्तर पर खुलासे को आधार बनाना (ii) जलवायु संबंधी कमजोर पक्षों की पहचान के लिए आंकड़े (iii) कमजोरियों का मूल्यांकन और (iv) नियामक और पर्यवेक्षक प्रथाएं और साधन।

जलवायु संबंधी जोखिमों के विश्लेषण के लिए साधारणतः बड़ी मात्रा में कणीय आँकड़ों (ग्रैन्युलर डेटा) की आवश्यकता होती है। वित्तीय प्रणाली हरितकरण मुद्रा (एनजीएफएस) संक्रमण जोखिम, भौतिक जोखिम और आर्थिक प्रभावों पर मानकीकृत परिदृश्यों और संबंधित डेटासेट के माध्यम से जलवायु जोखिमों का विश्लेषण हेतु एक आम (कॉमन) प्रारंभिक बिंदु प्रदान करता है। एक आम समस्या यह है कि भौतिक और संक्रमण जोखिमों के प्रति फर्मों के एक्सपोजर संबंधी डेटा में संगति और कणिकता (ग्रैन्युलैरिटी) का अभाव है। फर्मों में जलवायु संबंधी जोखिमों के दूरदर्शी आकलन को विकसित करने और खुलासा करने की क्षमता का भी अभाव है। इनमें से कुछ आंकड़ों संबंधी कमियां उदीयमान बाजार अर्थव्यवस्थाओं में अधिक गंभीर हैं।

आज तक, बैंकों और पर्यवेक्षकों द्वारा जलवायु-संबंधी वित्तीय जोखिमों का मापन निकट-अवधि संक्रमण जोखिम चालकों को प्रतिपक्ष और संविभाग एक्सपोजर में मैप करने पर केंद्रित है। जलवायु संबंधी जोखिमों को विभिन्न वित्तीय जोखिम श्रेणियों में परिवर्तित करने की पद्धति के प्रयोग में जैसे-जैसे बैंकों और पर्यवेक्षकों ने प्रगति की है, उन्होंने मुख्यतः ऋण जोखिम के आकलन पर ध्यान दिया है (बीआईएस, 2021)।

आगे चलकर, यह आवश्यक है कि प्राधिकारी हितधारकों के साथ जुड़े और उद्योग निकायों का गठन हो ताकि उद्योग जगत के अपनाने लायक मार्गदर्शन प्राप्त हो व सर्वोत्तम प्रथाएं निर्धारित हों। केंद्रीय बैंक और पर्यवेक्षक ऐसे उद्योग निकायों के गठन को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

संदर्भ : एफएसबी (2020) *द इम्प्लीकेशन ऑफ क्लाइमेट चेंज फॉर फाइनेंशियल स्टेबिलिटी* <https://www.fsb.org/2020/11/the-implications-of-climate-change-for-financial-stability/> पर उपलब्ध एनजीएफएस (2021) 'अडॉप्टिंग सेंट्रल बैंक आपरेशन्स टू ए हॉटर वर्ल्ड रिव्यूइंग सम ऑप्शन्स' <https://www.ngfs.net/en/adapting-central-bank-operations-hotter-world-reviewing-some-options> पर उपलब्ध

बीआईएस (2021) 'क्लाइमेट - रीलेटेड फिनेंशियल रिस्क - मेजरमेंट मेथडॉलॉजीस' <https://www.bis.org/bcbs/publ/d518.pdf> पर उपलब्ध

जोखिमों के लिए वित्तीय संस्थाओं के एक्सपोजर को मापने के लिए आंकड़ों की कमी प्रमुख बाधा प्रतीत होती है और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठन और एसएसबी इसका हल निकालने के लिए काम कर रहे हैं।

II.19 अक्टूबर 2021 में एफएसबी ने फर्म-स्तरीय खुलासे के लिए जलवायु संबंधी वित्तीय जोखिमों को दूर करने के लिए जी20 को एक व्यापक रोडमैप प्रस्तुत किया। रोडमैप जलवायु संबंधी कमजोरियों की पहचान के लिए उपादान देता है। एफएसबी ने जी20 को टीसीएफडी की सिफारिशों के अनुरूप सुसंगत, उच्च गुणवत्ता वाले जलवायु खुलासों को बढ़ावा देने के तरीकों पर एक और रिपोर्ट प्रस्तुत की है।

केन्द्रीय बैंक डिजिटल करेंसी (सीबीडीसी) सीमा पार लेनदेनों की भूमिका

II.20 पिछले एक दशक में, सीमा-पार प्रतिनिधि बैंकिंग²⁹ क्षीण पड़ गई है, 2011-18³⁰ के दौरान प्रतिनिधि बैंकों की संख्या में लगभग 20 प्रतिशत की गिरावट आई है। ये बैंक अधिकतर उन देशों से हटे जहाँ अभिशासन और अवैध वित्तपोषण पर नियंत्रण घटिया था। प्रतिनिधि बैंकों के हटने से वित्तीय समावेश को क्षति पहुँच सकती है, सीमा पार भुगतानों की लागत बढ़ सकती है या हो सकता है वे भूमिगत हो जाएं।

II.21 कई केंद्रीय बैंक बड़ी तेजी से केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (सीबीडीसी) विकसित करने की ओर बढ़ रहे हैं।³¹ सीबीडीसी के लिए डिजाइन और नीतिगत निर्णय जटिल हैं और इनका समाधान करने की आवश्यकता है। सीबीडीसी के प्रारंभ होने से सीमा पार भुगतान की कुशलता बढ़ने की संभावना है और यह आगे चलकर प्रतिनिधि बैंकों का एक विकल्प हो सकता है। हांगकांग, थाईलैंड, चीन और यूएई के केंद्रीय बैंकों के साथ मिलकर बीआईएस इनोवेशन हब "एमब्रिज" नामक एक प्रोटोटाइप प्लेटफॉर्म बनाने की दिशा में काम कर रहा है। यह

सह-निर्माण परियोजना वितरित खाताबही प्रौद्योगिकी (डीएलटी) की क्षमताओं का अन्वेषण करती है और बहु-मुद्रा सीमा-पार भुगतान के समर्थन हेतु वित्तीय बुनियादी ढांचे को बढ़ाने में सीबीडीसी के प्रयोग का अध्ययन करती है। अप्रैल 2021 में प्रकाशित चरण 2 के प्रोटोटाइप के परिणामों ने तत्काल, सस्ता और सुरक्षित सीमा पार भुगतान और निपटान में डिजिटल मुद्राओं और डीएलटी के उपयोग की संभावना दर्शाई। यह प्लेटफॉर्म अंतरराष्ट्रीय अंतरण और विदेशी मुद्रा परिचालनों को, जिसके लिए सामान्यतः कई दिनों का समय लगता है, कुछ सेकंड में पूरा करने में सक्षम है, और यह 24/7 आधार पर कार्य करता है। ऐसे परिचालनों की लागत भी उपयोगकर्ताओं के लिए घटकर आधी हो सकती है। हालांकि, बीआईएस ने चेताया है कि लाभ "सीबीडीसी डिजाइन के लिए हिप्पोक्रेटिक शपथ" से मिलने पर निर्भर हैं, जैसा कि केंद्रीय बैंकों के समूह ने रेखांकित किया है (2020)।

वैश्विक महामारी से सीखे गए सबक

II.22 हालांकि महामारी के दौरान वित्तीय क्षेत्र काफी हद तक प्रत्यास्थ और सुदृढ़ बना रहा, एफएसबी ने पाया कि विनियामक ढांचे में निहित लचीलेपन के बावजूद, बैंक अपने बफर का प्रयोग करने में कुछ संकोच कर रहे थे और ऋण देने के लिए प्रत्याशित ऋण हानि (ईसीएल) ढांचे में निहित लचीलेपन का उपयोग कर रहे थे।

II.23 राजकोषीय और मौद्रिक सहायता उपायों ने बैंकों की निधीयन लागत और उधार देने की दरों को कम करने में सहायता प्रदान की। तथापि, सहायता के लंबे समय तक चलने से हानि को पहचानने में विलंब, प्रावधानों में वृद्धि और पूँजी को संरक्षित करने के लिए उधार मानकों में सख्ती का जोखिम है। नीति निर्माताओं ने लाभांश पर प्रतिबंध, शेयर वापसी-खरीद और

²⁹ एफएसबी प्रतिनिधि बैंकिंग को एक बैंक ("प्रतिनिधि बैंक") द्वारा दूसरे बैंक ("प्रत्यर्थी बैंक") को बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने के प्रावधान के रूप में परिभाषित करता है।

³⁰ राईस टी, पीटर जी और बोर सी (2020) : 'ऑन द ग्लोबल रीट्रीट ऑफ कॉरस्पान्डेंट बैंक्स', बीआईएस क्वार्टर्ली रिव्यू, मार्च <https://www.bis.org/publ/qtrpdf/rqt2003g.htm> पर उपलब्ध

³¹ बीआईएस (2021) : 'सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसीस फॉर क्रॉस-बार्डर पेमेंट्स', <https://www.bis.org/publ/othp38.pdf> पर उपलब्ध

बोनस भुगतान जैसे विभिन्न उपायों के माध्यम से बैंकों की उधार देने की क्षमता बढ़ाने का प्रयास किया। आस्ति वर्गीकरण को लचीलापन बनाकर, पुनर्संरचना, प्रत्यक्ष राजकोषीय अंतरण और ऋण गारंटी, ऋण भुगतानों पर स्थगन; पुरोबंध (फोरक्लोज़र) पर प्रतिबंध, उधार वित्त पोषण योजनाओं और नैतिक दबाव द्वारा बैंकों की उधार देने की इच्छा को प्रोत्साहित किया गया।

11.24 वैश्विक महामारी के दौरान सीमा-पार आधार पर और तृतीय-पक्ष सेवा प्रदाताओं पर बहुत अधिक निर्भर वित्तीय होने वाले संस्थानों की लागत और लाभ स्पष्ट हो गए। यद्यपि ये निर्भरताएं लागत को कम करती हैं, परंतु वे परिचालन जोखिमों को भी विशेष रूप से बढ़ाती हैं साइबर और आँकड़ों की सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

11.25 वैश्विक महामारी के दौरान कुछ गैर-बैंक वित्तीय खंडों में चलनिधि बेमेलपन, लीवरेज और अंतरसंबद्धताओं के कारण होने वाली कमजोरियां देखने को मिली। एफएसबी की समग्र समीक्षा एक व्यापक और महत्वाकांक्षी कार्य योजना (वर्क प्रोग्राम) प्रस्तुत किया और एफएसबी ने मुद्रा बाजार निधियों (एमएमएफ), निरंतर स्वरूप की निधियाँ, मार्जिनिंग प्रैक्टिस, चलनिधि और सीमा-पार अमेरिकी डॉलर (यूएसडी) फंडिंग जैसे विशिष्ट मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया।

11.26 कारपोरेट और सरकारी (कर्ज) ऋण अंबार का वर्तमान उच्च स्तर पर होना ईएमडीई के लिए, विशेषतः बाद में असाधारण निभाव से बाहर आने के संदर्भ में, प्रणालीगत निहितार्थ रखता है। आगे जाकर, यह विनिमय की स्थितियों को बढ़ाते उनके लिए उपलब्ध नीति विकल्पों को सीमित करेगा। यूएसडी फंडिंग मार्केट के सुरक्षा हेतु पलायन (फ्लाइट फॉर सेफ्टी) और 'नकदी पर धावा' ('डैश-फॉर-कैश') वाले व्यवहार, जिसे कुछ निवेशकों व डीलरों की गतिविधियों से प्रचार मिला, के कारण ईएमडीई से अभूतपूर्व पूँजी बहिर्गमन हुआ है। चूँकि वर्तमान वैश्विक नियामक

व्यवस्थाओं में इस तरह के झटकों से बचाव के लिए कुछ खास मदद नहीं है, इसलिए इन देशों के नीति निर्माताओं को इनके घटनाक्रम पर नजर रखनी होगी और अपनी अर्थव्यवस्थाओं को बिना सोच-समझ की प्रतिक्रियाओं से बचाने के लिए तंत्र तैयार करना होगा।

3. वैश्विक बैंकिंग क्षेत्र का कार्यनिष्पादन

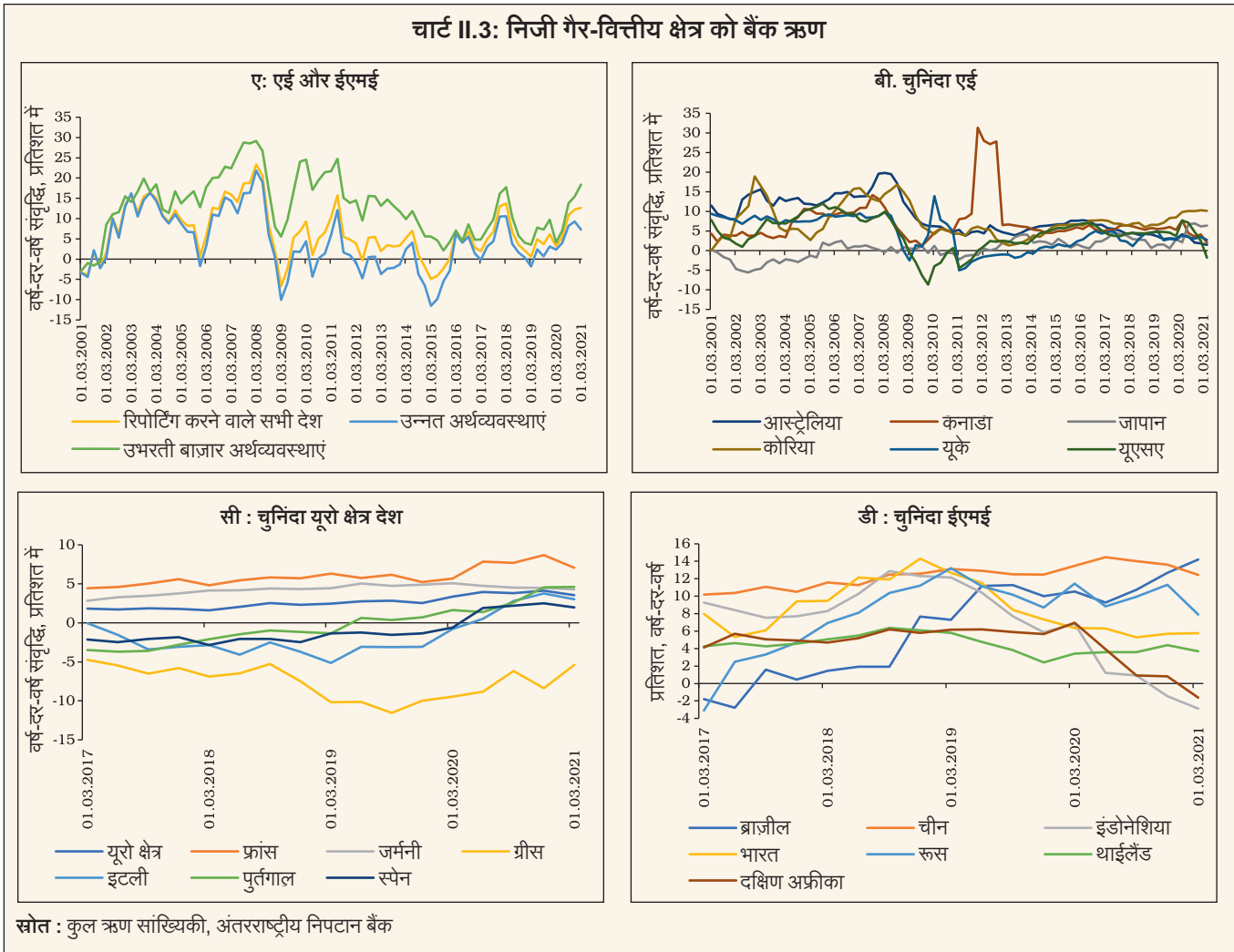
11.27 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के पश्चात के सुधारों के कार्यान्वयन के बाद कोविड-19 महामारी वैश्विक वित्तीय प्रणाली की पहली बड़ी परीक्षा थी। बड़े बैंकों में उच्च पूँजी, बेहतर चलनिधि प्रोफाइल और कम लीवरेज ने महामारी के समष्टि आर्थिक झटके को बढ़ाने के बजाय बचाव व्यवस्था का कार्य किया। बैंकिंग प्रणाली ने असाधारण सरकारी (ऑफिशियल) समर्थन की सहायता से वास्तविक क्षेत्र को ऋण और अन्य महत्वपूर्ण सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने में सक्रिय भूमिका निभाई।

बैंक ऋण वृद्धि³²

11.28 वैश्विक महामारी की शुरुआत के साथ मार्च 2020 को समाप्त तिमाही में निजी गैर-वित्तीय क्षेत्र को बैंक ऋण में तेजी से कमी आई, लेकिन बाद में, मुख्य रूप से उदीयमान बाजार अर्थव्यवस्थाओं के नेतृत्व में, यह पुनर्जीवित हुआ (चार्ट 11.3ए)। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (ईई) में कोरिया और जापान समग्र रुझान के विपरीत गए और महामारी आने के बाद भी उनकी ऋण वृद्धि सुदृढ़ बनी रही। कनाडा और यूके में ऋण वृद्धि के पुनर्जीवित होने के प्रारंभिक संकेत दिख रहे हैं (चार्ट 11.3बी)। मिस्र को छोड़कर यूरो क्षेत्र के सभी देशों में इसी तरह का पुनः प्रवर्तन हो रहा है (चार्ट 11.3सी)। ईएमई में बैंक ऋण देश विशिष्ट समष्टि आर्थिक परिस्थितियों और मांग पक्ष के कारकों द्वारा प्रभावित है (चार्ट 11.3डी)। आगे चलकर, अर्थव्यवस्थाओं के खुलने और टीकाकरण में तेजी आने से बैंक ऋण वृद्धि में तेजी आने की आशा है।

³² अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक (बीआईएस) से लिए गए आंकड़े, टोटल क्रेडिट स्टैटिस्टिक्स <https://www.bis.org/statistics/totcredit.htm> पर उपलब्ध

चार्ट II.3: निजी गैर-वित्तीय क्षेत्र को बैंक ऋण



आस्ति गुणवत्ता

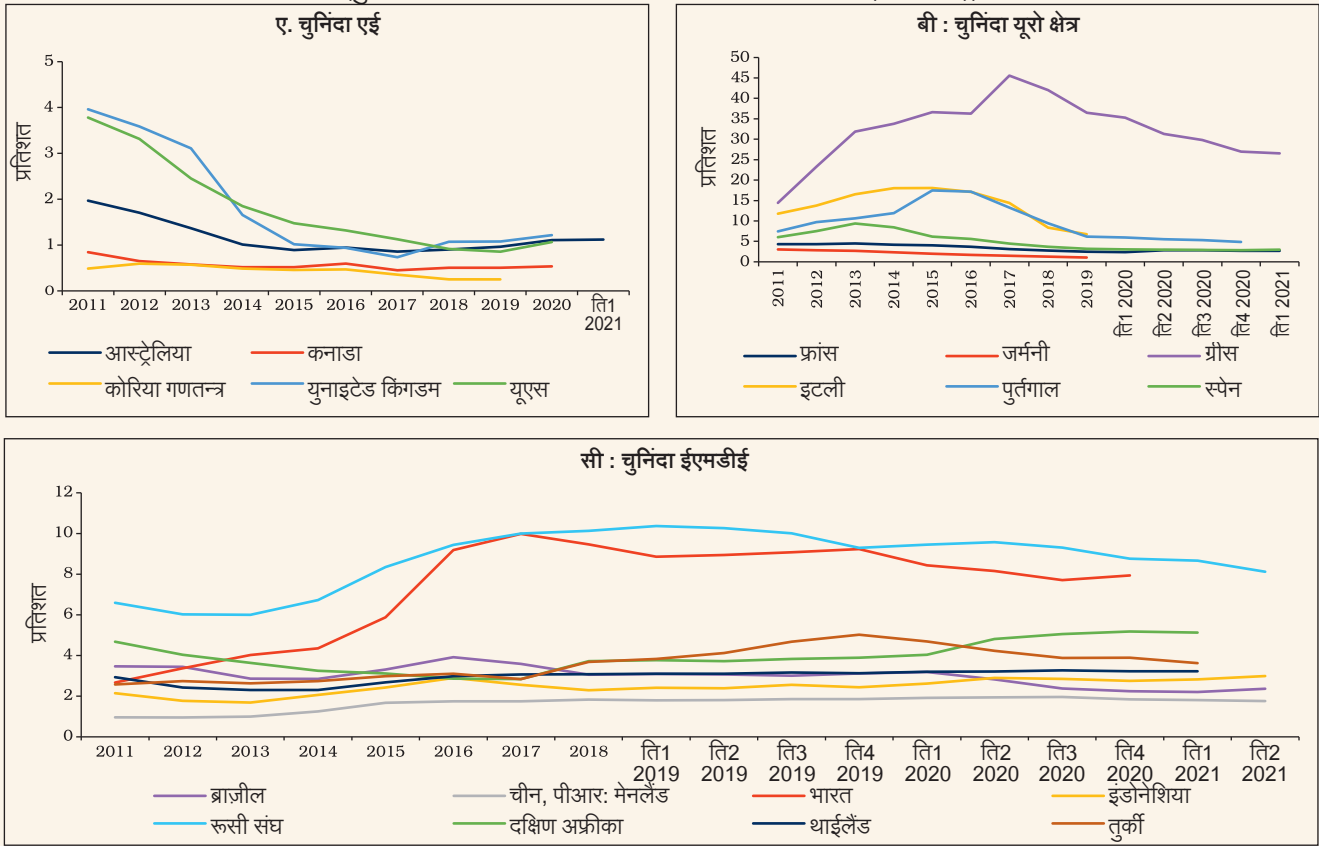
II.29 आस्ति गुणवत्ता की तुला पर उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बैंकों ने महामारी में आघात-सहन-क्षमता दर्शाई (चार्ट II.4ए)। संस्थागत और सरकारी हस्तक्षेप के कारण यूरो-क्षेत्र की परिधि में आने वाली दो अर्थव्यवस्थाओं, ग्रीस और पुर्तगाल में मुख्य रूप से अनर्जक उधार (एनपीएल) अनुपात कम हुआ है (चार्ट II.4बी)। ईएमई बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में महामारी से पहले ही व्यापक अंतर दिखाई दे रहा था। यद्यपि रूस और भारत में एनपीएल अनुपात सर्वोच्च बने हुए हैं, फिर भी महामारी के

दौरान, अन्य ईएमई के समान, उनकी आस्ति गुणवत्ता में गिरावट नहीं आई है। दक्षिण अफ्रीका बैंकिंग प्रणाली ने विपत्ती के संकेत दर्शाने प्रारम्भ कर दिए हैं (चार्ट II.4सी)। आगे चलकर, जैसे-जैसे निर्धारण विराम चरणबद्ध रूप से समाप्त किए जाएंगे, संचित पूंजी बफर प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में बैंकों की सहायता कर सकते हैं।

बैंक लाभप्रदता

II.30 आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए) के माध्यम से मापित बैंक लाभप्रदता में आम तौर पर 2020 में गिरावट आई क्योंकि बैंकों की ब्याज आय में कमी आई परंतु जमा लागतों में वृद्धि हुई

चार्ट II.4 : आस्ति गुणवत्ता
(कुल सकल ऋण के प्रतिशत के रूप में अनर्जक उधार (एनपीएल))

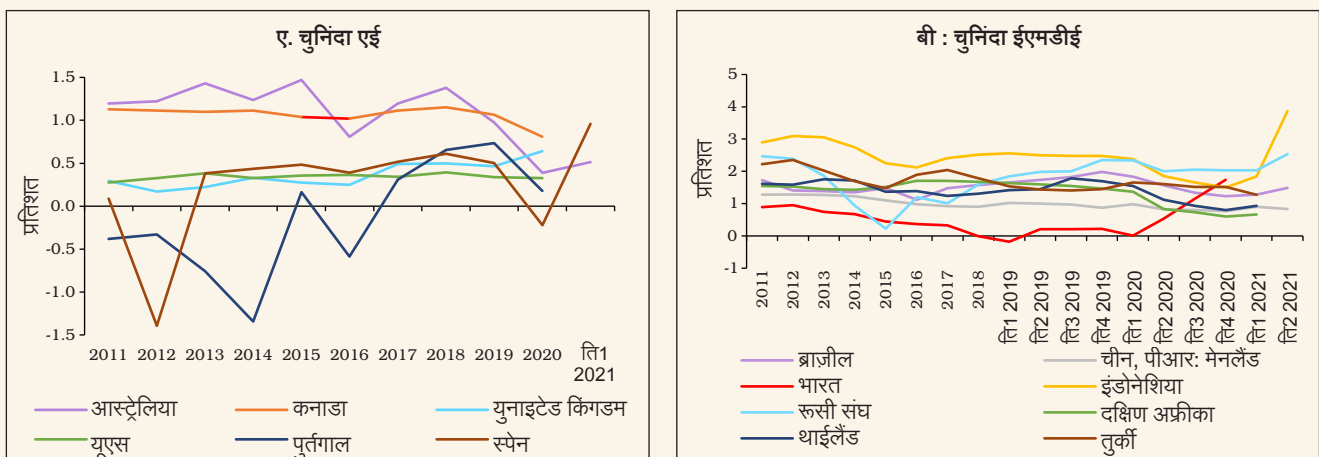


स्रोत: वित्तीय सुदृढ़ता संकेतक, आईएमएफ

है। 2021 में, ऑस्ट्रेलिया, यूनाइटेड किंगडम और स्पेन में बैंक लाभप्रदता में सुधार के संकेत दे रहे हैं (चार्ट II.5ए)। ईएमडी की

कहानी उतनी आशाजनक नहीं। भारतीय बैंक 2020 में लाभप्रद हो गए और लाभ दर्ज किए जा रहे हैं। (चार्ट II.5बी)।

चार्ट II.5 : आस्तियों पर प्रतिलाभ



स्रोत: वित्तीय सुदृढ़ता संकेतक, आईएमएफ और बैंकों के वार्षिक लेखा

नोट: भारत से संबंधित आरओए मार्च-अंत से संबंधित है

पूँजी पर्याप्तता

11.31 विभिन्न अधिकार क्षेत्रों में बासल III मानदंडों के कार्यान्वयन में लगातार प्रगति हुई है, यद्यपि इसकी गति अलग-अलग है। प्रणालीगत आई और ईएमई के बैंकों में पर्याप्त पूँजी रही (चार्ट 11.6 ए और बी)। वैश्विक वित्तीय संकट के बाद तैयार सुदृढ़ पूँजी और चलनिधि स्थितियों के कारण वैश्विक बैंकिंग प्रणाली महामारी का सामना कर पाई।

लीवरेज अनुपात

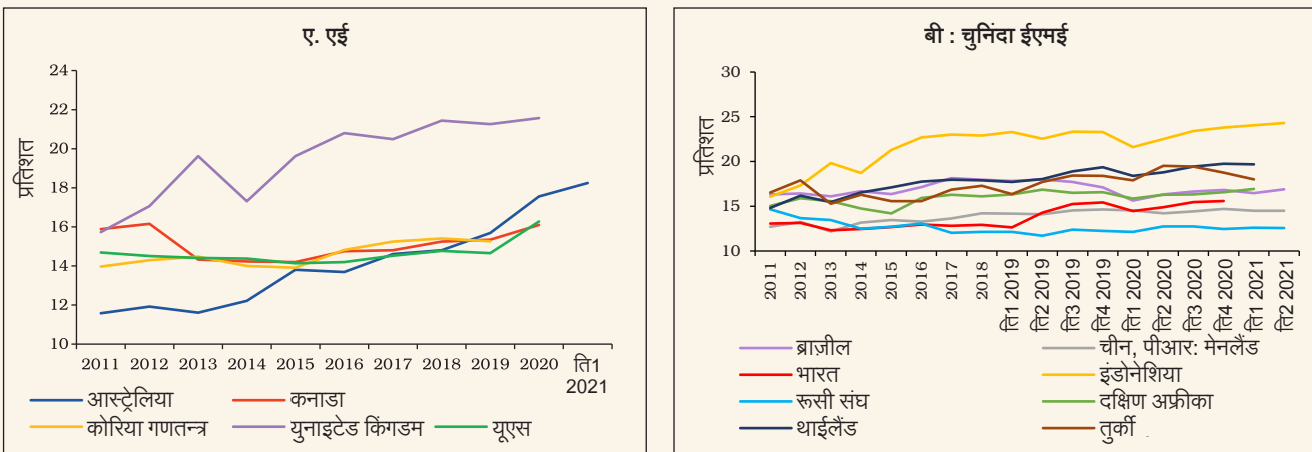
11.32 बासल III मानदंडों के कार्यान्वयन से पर्याप्त सुधार दर्शाने के पश्चात, लीवरेज अनुपात में, जिसे कुल आस्ति की तुलना में पूँजी अनुपात से मापा जाता है, 2020 में सभी अधिकार क्षेत्रों में गिरावट आई है, जो बैंकों की आस्तियों की तुलना में पूँजी के अधिक तीव्रता से गिरने का संकेतक है। यह गिरावट अमेरिका और इंडोनेशिया जैसे परंपरागत रूप से उच्च लीवरेज अनुपात वाले क्षेत्रों में भी स्पष्ट थी। वैसे, जुलाई 2021 में बीआईएस के 47 बड़े अंतरराष्ट्रीय रूप से सक्रिय बैंकों के एक सर्वे ने यह दर्शाया कि लीवरेज अनुपात³³ इन बैंकों के लिए कोई बाध्यकारी बाधा नहीं थी (चार्ट 11.7)।

वित्तीय बाजार संकेतक

11.33 वैश्विक महामारी की शुरुआत में वित्तीय बाजारों में मंदी देखी गई। फरवरी के अंत और मार्च की शुरुआत में, गंभीर तनाव ने बाजारों को घेर लिया। फरवरी के अंत से मार्च की शुरुआत तक पहले चरण में, निवेशकों ने अधिक जोखिम वाली आस्तियां बेचकर अपने 'सुरक्षित की ओर पलायन' (फ्लाइट-टू-सेफ्टी) वाले व्यवहार का प्रदर्शन किया। मध्य-मार्च से दूसरे और अधिक विकट चरण में, उनका व्यवहार 'नकदी पर धावा' ('डैश फॉर कैश') में बदल गया। इस चरण में निवेशकों ने नकदी या नकदी जैसे लिखतों को प्राप्त करने के प्रयास में जोखिम वाली और अपेक्षाकृत सुरक्षित आस्तियां भी बेची डालीं। मार्च के अंत तक, प्राधिकारियों द्वारा तेजी से, बड़े पैमाने पर और व्यापक हस्तक्षेपों के बाद दबाव काफी कम हो गया, और बाजार उत्तरोत्तर व्यवस्थित परिस्थितियों में लौट आए।

11.34 बैंक इक्विटी मूल्य सूचकांकों में काफी हद तक सुधार है, लेकिन उनका स्तर पूर्व-कोविड स्तर से कम है (चार्ट 11.8ए)। जून 2021 से, भारतीय बैंकों की इक्विटी कीमतों में तेजी से सुधार हुआ, जबकि चीन के बैंकों की इक्विटी कीमतों में गिरावट शुरू हो गई है, मुख्य रूप से इसके स्थावर संपदा क्षेत्र से जुड़ी चिंता को दर्शाती है।

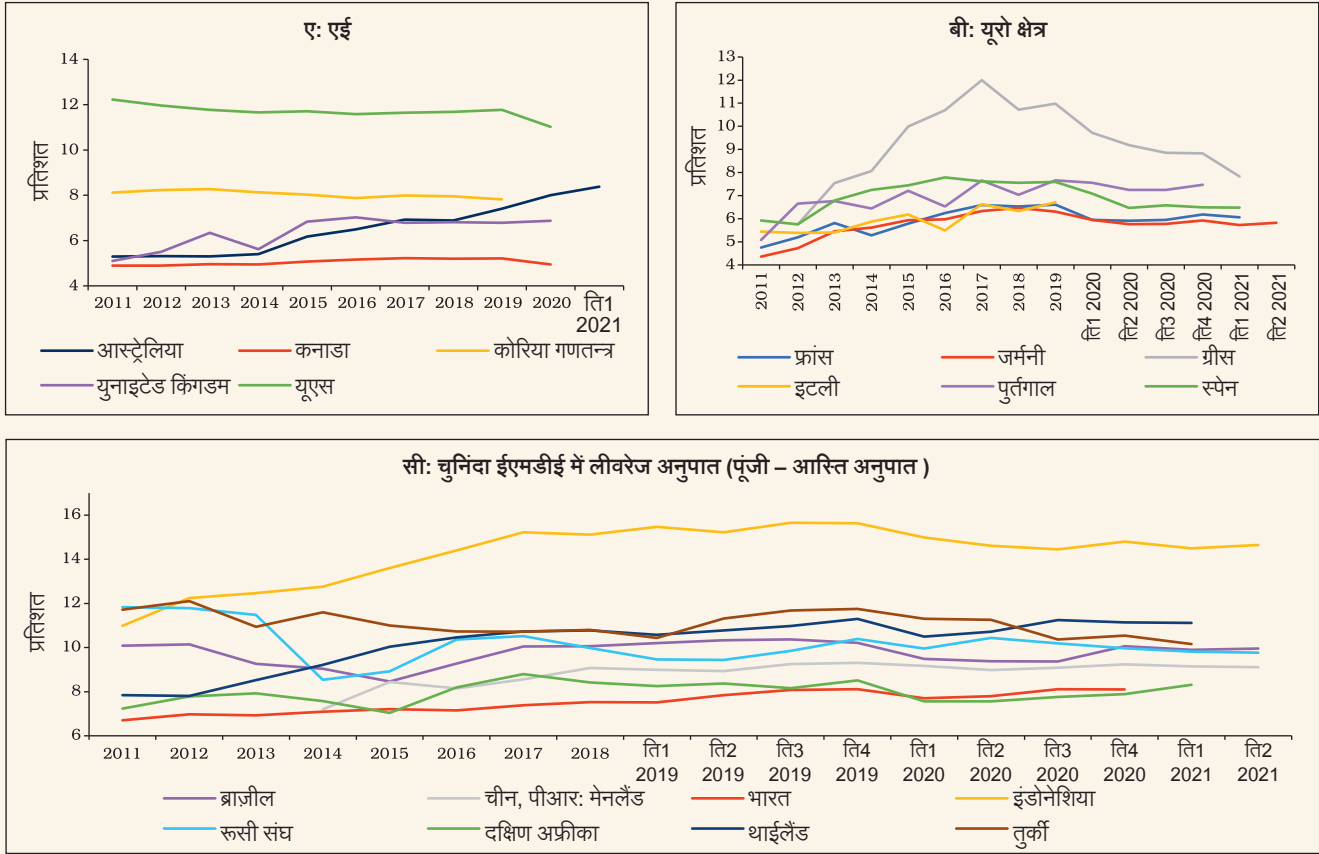
चार्ट 11.6 : पूँजी पर्याप्तता अनुपात



स्रोत : वित्तीय सुदृढ़ता संकेतक, आईएमएफ

³³ सर्वे में लीवरेज अनुपात को बेसल III मानदंडों के अनुरूप आस्ति की तुलना में टीयर I पूँजी अनुपात के रूप में परिभाषित किया गया है। हालांकि, चूंकि सभी अधिकार क्षेत्रों के लिए टीयर I पूँजी पर तुलना हेतु आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए इस उप-खंड में आस्ति की तुलना में पूँजी अनुपात की व्यापक अवधारणा पर आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

चार्ट II. 7 : लीवरेज अनुपात
(पूँजी - आस्ति अनुपात, प्रतिशत में)

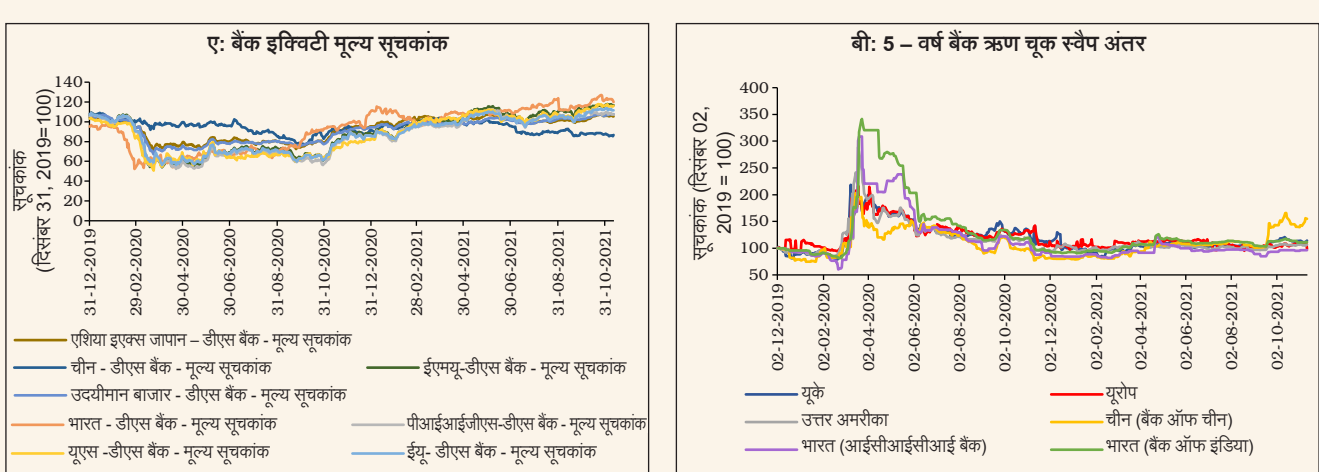


स्रोत : वित्तीय सुदृढ़ता संकेतक, आईएमएफ

II.35 ऋण चूक स्वैप (सीडीएस) स्प्रेड में दिसंबर 2019 से फरवरी 2020 तक गिरावट आई और मार्च 2020 से जून 2020

तक इनमें उच्च अस्थिरता दिखाई दी। तब से आम तौर पर सीडीएस स्प्रेड में गिरावट आई है और ये महामारी से पहले के

चार्ट II. 8 : बैंक स्वास्थ्य के बाज़ार-आधारित संकेतक



स्रोत: डेटास्ट्रीम

स्तर पर थे। हाल की अवधि में सीडीएस स्प्रेड में वृद्धि देखी गई है, यद्यपि, इसका अर्थ बढ़ते जोखिम प्रीमियम हैं (चार्ट 11.8बी)

4. विश्व के सबसे बड़े बैंक

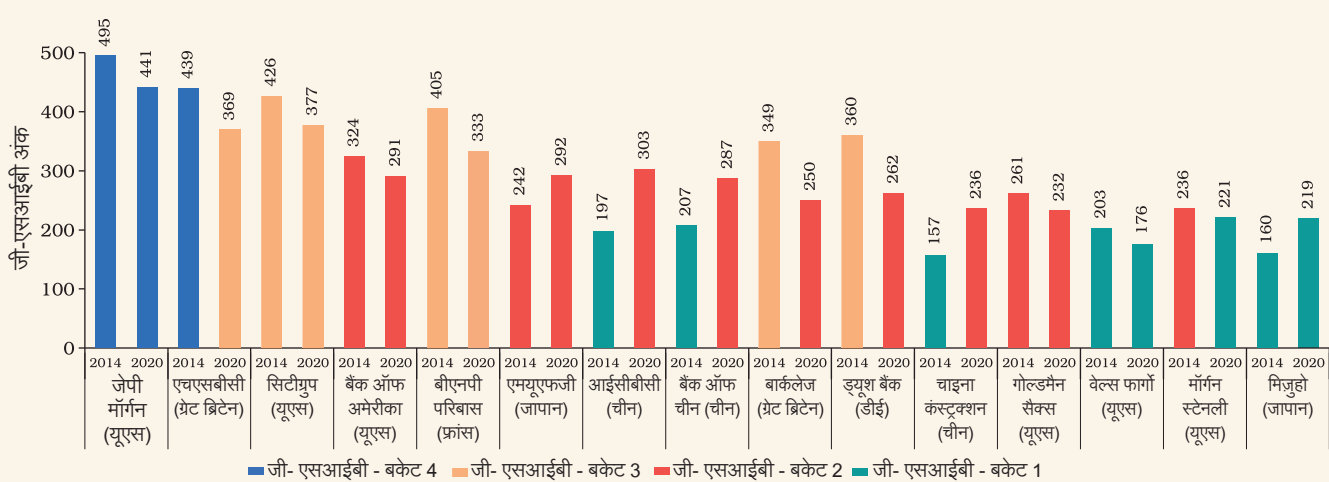
11.36 वैश्विक महामारी के दौरान, बड़े बैंकों ने बाजार बनाने का कार्य करना जारी रखा, बावजूद कुछ प्रमाणों के जिनके अनुसार बाजार के कुछ खंडों ने अतरलता (इल्लिक्विडिटी) का अनुभव किया। वित्तीय बाजार आधार-संरचना (एफएमआई), विशेष रूप से केंद्रीय प्रतिपक्षकारों (सीसीपी) ने अभीष्ट के अनुरूप कार्य किया³⁴। साथ ही, बड़े बैंकों ने ट्रेड्स के अपने समर्थन में वृद्धि की और विभिन्न प्रकार के लिखतों में अपनी प्रतिभूति धारिताएं बढ़ाईं। उन्होंने डेरिवेटिव में सक्रिय रूप से ट्रेड करना जारी रखा है, जो कि 2019 के अंत से 2020 के मध्य तक डेरिवेटिव स्थितियों के कल्पित (नोशनल) और सकल (ग्रॉस) बाजार मूल्य (क्रमशः 8.6 प्रतिशत और 33.6 प्रतिशत) दोनों में वृद्धि से प्रमाणित है³⁵।

वैश्विक प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बैंक (जी- एसआईबी)

11.37 2014 से उपलब्ध बीआईएस आंकड़े बताते हैं कि इस अवधि के दौरान चीन आधारित तीन बैंकों को छोड़कर विश्व के 15 शीर्ष बैंकों के जी-एसआईबी खंड या तो हटकर कम जोखिमवाले हो गए हैं या स्थिर रहे हैं (चार्ट 11.9)। इस प्रकार, जी-एसआईबी के लिए उच्चतर पूँजी बनाए रखने की विनियामकीय अपेक्षा के दबाव ने उन्हें अपनी जटिलता, विभिन्न अधिकार क्षेत्रों में उपस्थिति, अंतर्संबद्धता, परिचालनों का आकार व प्रतिस्थापनीयता को कम करने को प्रेरित किया है।

11.38 वैश्विक महामारी ने बैंकों की प्रत्यास्थता और बाजार अनुशासन की परीक्षा ली। एसआईबी सहित बैंकों की जोखिम आधारित पूँजी और लीवरेज अनुपात में सुधार हुआ। परिपक्व होने वाले अपात्र ऋण को बदलने के लिए अधिकांश जी-एसआईबी के टीएलएसी ऋण निर्गमों को बाजारों ने बिना किसी कठिनाई के समाहित कर लिया। एसआईबी, विशेष रूप से जी-एसआईबी की लाभप्रदता अन्य बैंकों की तुलना में गिर गई है क्योंकि सीमा पार उधार बढ़ता रहा।

चार्ट 11.9 : शीर्ष 15 बैंकों के जी-एसआईबी अंक : 2020 बनाम 2014

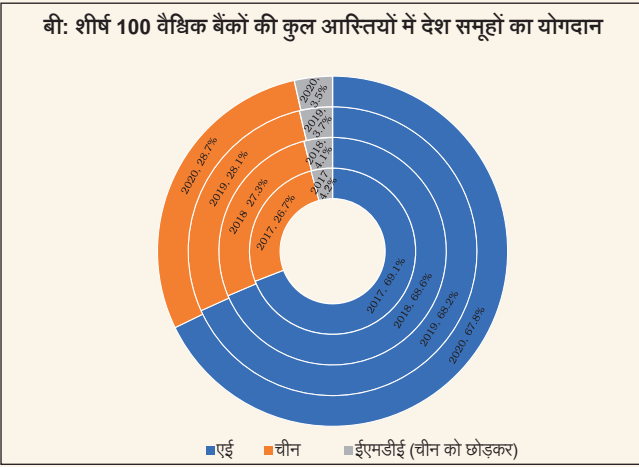
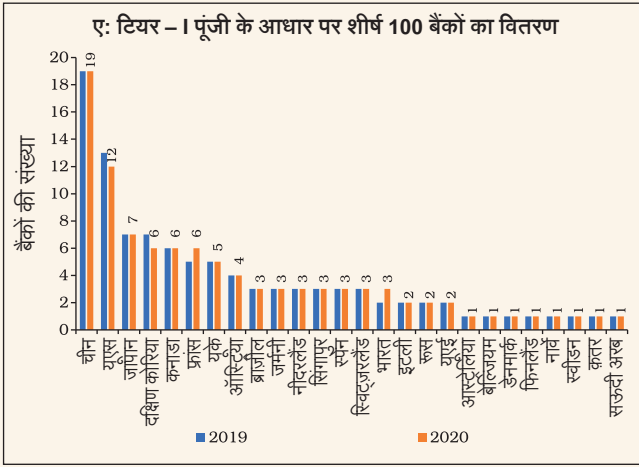


स्रोत: बीआईएस

³⁴ एफएसबी(2021), लेसन्ज़ लर्नट फ़्रोम द कोविड 19- पेन्डेमिक फ़्रोम ए फ़िनेन्शल स्टैबिलिटी पर्सपेक्टिव <https://www.fsb.org/wp-content/uploads/P2-281021.pdf> पर उपलब्ध

³⁵ आईएसडीए (2021), द रोल ऑफ़ फ़िनेन्शल मार्केट्स एंड इन्स्टिट्यूशन्स इन सपोर्टिंग द ग्लोबल इकॉनमी ड्यूरिंग द कोविड 19- पैन्डेमिका <https://www.isda.org/a/zZzTE/The-Role-of-Financial-Markets-and-Institutions-in-Supporting-the-Global-Economy-During-the-COVID-19-Pandemic.pdf> पर उपलब्ध

चार्ट II. 10 : टियर – I पूंजी के आधार पर शीर्ष 100 बैंकों का वितरण



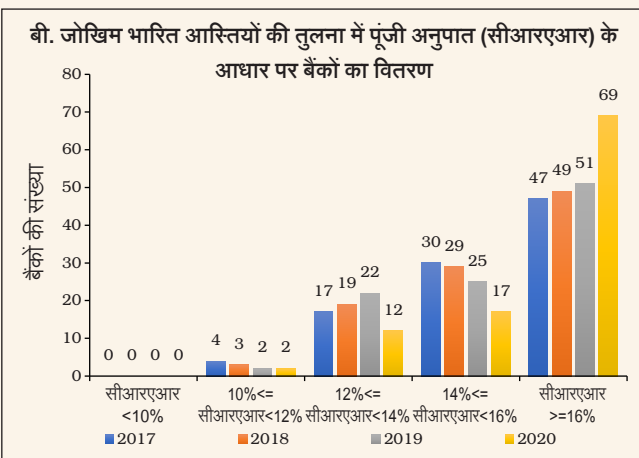
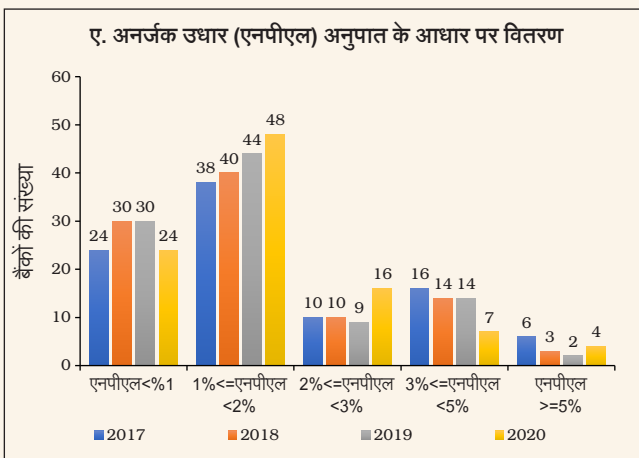
स्रोत: बैंकर डेटाबेस, फिनैन्शल टाइम्स

विश्व के शीर्ष 100 बैंक³⁶

II.39 दिसम्बर 2020 में टियर –I पूंजी के आधार पर, चीन (19), अमरीका (12) और जापान (7) में सर्वाधिक शीर्ष 100 बैंक थे (चार्ट II.10ए)। कुल आस्तियों का लगभग 68 प्रतिशत (यूएस डॉलर में) उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (ईए) में स्थित बैंकों में था, कुल आस्तियों का लगभग 29 प्रतिशत चीन स्थित बैंकों के पास था और अन्य उदयमान बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं वाले (ईएमडीई) देशों में स्थित बैंकों के पास था (चार्ट II.10बी)।

II.40 शीर्ष 100 बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में मामूली गिरावट आई है। तीन श्रेणियों अर्थात् 5 प्रतिशत से अधिक, 2 से 3 प्रतिशत और 1 से 2 प्रतिशत के बीच के अनर्जक उधारों (एनपीएल) वाले बैंकों की संख्या में वृद्धि हुई है (चार्ट II.11 ए)। तथापि, बैंकों की पूंजी पर्याप्तता सहज बनी रही और 2020 में ऐसे बैंक 69 हो गए जिनमें जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात (सीआरएआर) 16 प्रतिशत से

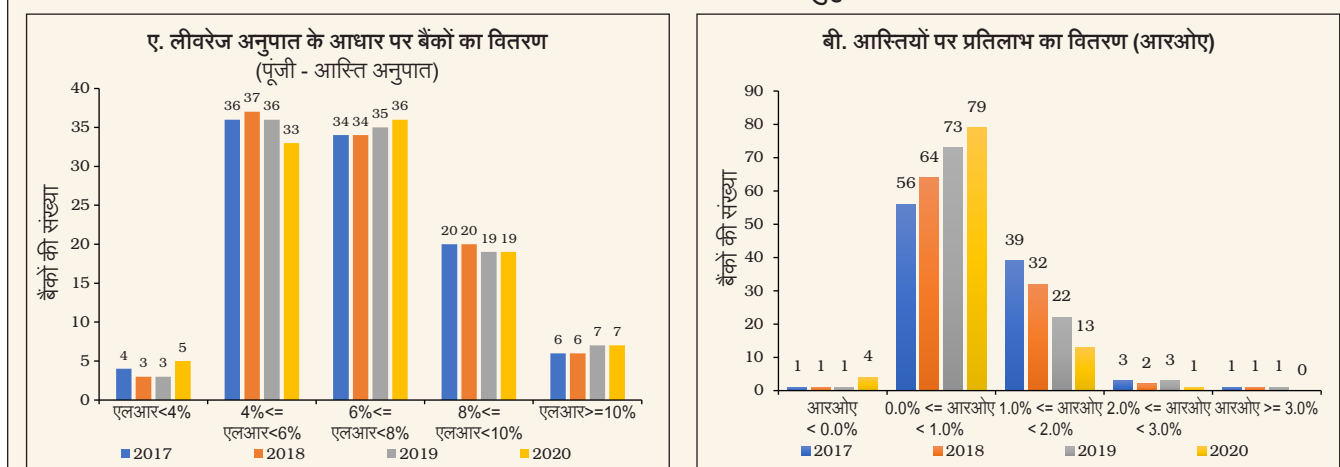
चार्ट II. 11 : शीर्ष 100 बैंकों की आस्ति गुणवत्ता और पूंजी पर्याप्तता



स्रोत: बैंकर डेटाबेस, फाइनेन्शल टाइम्स

³⁶ फिनैन्शल टाइम्स के बैंकर डेटाबेस से लिए गए आंकड़े

चार्ट II. 12 : शीर्ष 100 बैंकों की सुदृढ़ता



स्रोत: बैंकर डेटाबेस, फ़ाइनेन्शियल टाइम्स

अधिक रहा जबकि 2019 में ऐसे बैंकों की संख्या 51 थी (चार्ट II.11 बी)।

II.41 लीवरेज अनुपातों (आस्ति की तुलना में पूँजी अनुपात) में कोई खास बदलाव नहीं आया और 69 प्रतिशत बैंकों का लीवरेज अनुपात 4 से 8 प्रतिशत के दायरे में रहा। पाँच बैंकों - दो फ्रांस में तथा जर्मनी, डेनमार्क और जापान में एक-एक - का लीवरेज अनुपात 4 प्रतिशत से कम रहा (चार्ट II.12 ए)। आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए) में मामूली गिरावट थी। चार बैंकों ने जहाँ ऋणात्मक आरओए रिपोर्ट किया, वहीं उनासी बैंकों ने 1 प्रतिशत से कम और 13 बैंकों ने 1 से 2 प्रतिशत के बीच आरओए दर्ज किया (चार्ट II.12 बी)।

5. निष्कर्ष

II.42 सभी अधिकार क्षेत्रों में प्रतिबंधों में ढील से प्रोत्साहित व्यापार और वैश्विक आर्थिक गतिविधि में धीरे-धीरे सुधार के कारण बैंकिंग क्षेत्र पर महामारी का प्रभाव मंद सिद्ध हो रहा है, जिसका मुख्य कारण कई अधिकार क्षेत्रों में आस्ति गुणवत्ता विराम के साथ-साथ मजबूत नीतिगत अवलंब का बने रहना है। तथापि, आगे चलकर, नीति निर्माता अपने अवलंब जैसे-जैसे हटाते हैं, वैसे-वैसे बैंकिंग क्षेत्रों पर दबाव उभरकर सामने आ सकता है। जिन क्षेत्रों पर वैश्विक महामारी का प्रभाव सर्वाधिक पड़ने की संभावना है, वे आस्ति गुणवत्ता और लाभप्रदता हैं। बासल III मानदंडों के कार्यान्वयन के बाद उच्च पूँजी बफर ने बैंकों के तुलन पत्रों को मजबूत किया है, जो दबाव का प्रबंधन करने और सुदृढ़तर होकर उभरने में बैंकों के लिए सहायक हो सकता है।